IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 12, Issue 1, December 2021

Impact Factor: 4.819

>Bk lp ¼1958½ esa lkekftd Lo:i

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

दो भागों में प्रकाशित 'यशपाल' का यह उपन्यास देश के सामाजिक और राजनैतिक वातावरण को यथासम्भव ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित करने का प्रयास करता है। उपन्यास के प्रथम खण्ड का नाम 'वतन और देश है' तथा द्वितीय खण्ड का नाम 'देश का भविष्य' है। उपन्यास का पहला भाग देश के यथार्थ विघटन को रूपायित करता है तो दूसरा भाग संघटन को 'देश के बँटवारे के समय और उसके पहले तथा बाद में साम्प्रदायिक विभीषिका में जलते लोगों का मार्मिक चित्रण किया गया है।

विभाजन के बाद देश के लाखों निरपराध आदमियों को तलवार के घाट उतार दिया गया। लाखों लोग गृहविहीन, कुटुम्बहीन हो गए। अनेक प्रकार की पाशविक यंत्रणाओं से जूझते हुए लोगों ने अपने लिए तथा स्वतंत्र देश के लिए अनगिनत समस्याएँ पैदा की। मानवीय यातना के इतिहास में यह विश्व की क्रूरतम, घटनाओं में से एक मानी जाएगी। 'चमन लाल' के शब्दों में ''बीसवीं शताब्दी के चौथे–पाँचवे दशक के हिन्दुस्तानी जीवन की लय उसकी मार्मिक और प्रामाणिक छवि प्रस्तुत करता है।''[1]

1. हरिमोहन शर्मा– विभाजन की त्रासदी की महागाथा, वर्तमान साहित्य पृ0– 340